अन्नपूर्णा योजना
7 जन्मदिन | वैवाहिक वर्षगाँठ | पूर्वज-वार्षिकी

धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

प्रकाशन तिथि : 09 दिसम्बर, 2025
Posted at N.I. Estate P.O. N.D.-28
From 11-12-2025 to 15-12-2025

The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN-2001-3044 Regd.
News Paper "Registered"
- DL(W) 10/2034/2023-25
- U(W)-37/2023-25
Licenced to post without prepayment

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

दिसम्बर, 2025 | पौष/माघ | सं. 2082 | अंक 293 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

नववर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाएं!

नववर्ष आपके जीवन में नवीन ऊर्जा, नए संकल्प और नया उत्साह लेकर आए ऐसी मंगलकामना है।
-सुधांशु जी महाराज

प्रतिष्ठा में,

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 समाचार दर्शन | 8 समाचार दर्शन

सुखद संध्या में करें उज्जवल प्रभात की तैयारी

जब सूरज का जाना हो रहा हो और तारों की बारात आने वाली हो, आकाश में कोई तारा दिखाई देने लगे, कोई तारा अभी चमका है और सूरज जाने लगा है। आसमान में लाली और कालिमा दोनों घुल-मिल गए हैं, यह वह वेला होती है जिसे हम सांध्य वेला कहते हैं। कहते हैं उस संधि बेला में संधि करने का समय है। मतलब दुनिया के कार्य निपट गए, अब प्रभु से जोड़ो अपने आपको।

नमः सायं नमः प्रातर्नमोरात्र्या नमो दिवा।
भद्राय च सर्वाय च उभाभ्याम् कर्म नमः॥

हर शाम तुम्हें नमन है हर सुबह तुम्हें प्रणाम करता हूं, हर रात्रि तुम्हारे प्रणाम के साथ शुरू हो।हर दिन तेरे नमन के साथ ही व्यतीत हो। भद्राय च सर्वाय च, भला करने वाले सर्वाय च-दुःख दूर करने वाले, तेरे मैं इन दोनों रूपों को प्रणाम करता हूं। यह ऐसा मंत्र और प्रार्थना है जब भी आप कहीं किसी भी ऐसे स्थान पर जाएं, कोई सुंदर नदी का तट हो और लताओं से घिरा हुआ, कोई निकुंज हो या फूलों से भरी हुई कोई बगिया हो तो उस भगवान को प्रणाम करना, मन ही मन कहना कि फूलों में हंस रहे हो, कलियों में खिल रहे हो, हर दिल में बस रहे हो, कोई भी ऐसा स्थान नहीं प्रभु जहां तू नहीं है। बच्चों की किलकारियों में या किसी भोले व्यक्ति की मुस्कान में। किसी भक्त की आंख में और किसी दानी के हाथ में। किसी मंजिल की ओर सन्मार्ग में चलते हुए पथिक के पग में या फिर किसी ज्ञानी के शब्द में या गाते हुए किसी गायक के स्वर में। समस्त साज में और समस्त आवाजों में, एक उसी का रस बहता है, जिसके लिए अनेक-अनेक नाम भाव विभोर होकर हम लोग पुकारते हैं कि तू ही कृष्ण-कन्हैया है, तू ही राम रम्मैया है।' तू ही मेरा शिव है, तू ही मेरा ओंकार है, तू ही तो निरंकार है, तू ही स्वयंभू है कितने नाम हैं तेरे, सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वशक्तिमान, शुद्ध-बुद्ध, निरंजन, निर्विकार अनुपम सभी नाम हैं तेरे। तू ही ज्योतिर्मय है, तू ही प्रकाश स्वरूप है, तू ही पथ प्रदर्शक है, तू ही राह दिखाने वाला है, तू ही माता है, तू ही पिता है, तू ही मेरा सखा है, तू ही मेरा धन है, तू ही निर्बल का बल है, तू अनाथों का नाथ है, तू दीनों का दीनानाथ है। किस तरह से तुझे पुकारूं? कौन-कौन से नाम लूं? कैसे-कैसे तुझे रिझाऊं? कैसी-कैसी तेरी प्रार्थना करूं? सर्वत्र तू ही है। सब शब्द तेरे ही हैं, तेरे ही सारे भजन हैं, सारी पुकार तेरे लिए ही है, सब कुछ तेरा ही है, मैं भी तेरा हूं, जग भी तेरा है, हे प्रभु! मुझे स्वीकार कर, अपने चरणों से लगा, कभी भटक जाऊं, खो जाऊं तो फिर भले ही ठोकर लगाकर मुझे अपनी राह पर ले जाना पड़े तो जरूर ले चलना पर दुनिया में भटकने मत देना, मुझे इस दुनिया में खोने मत देना। मैं तेरा होना चाहता हूं, तुझसे मिलना चाहता हूं। जैसे कोई नदी सागर में मिलकर सम्पूर्णता प्राप्त करती है, ऐसे मैं तुझमें मिलकर अपनी रिक्तता को अपने अभाव को दूर कर लेना चाहता हूं।

अपने जीवन को कर्मशील बनाओ। सफलता कर्मशील मनुष्यों के ही पांव चूमती है। कर्मशीलता से अपने भाग्य को सौभाग्य बनाओ। वर्ष 2025 बीत रहा है, नया वर्ष 2026 आने वाला है। भगवान करे इस नये वर्ष में नव हर्ष हो, नव उल्लास, नई उमंग हो। नव चेतना का जागरण हो। आप सभी आगे बढ़ें, तरक्की करें, सभी के घरों में खुशहाली हो, सभी के बाल-बच्चे संस्कारवान हों और हमें अपनी सनातन संस्कृति पर गर्व हो।

इस वर्ष का आखिरी महीना दिसम्बर चल रहा है। वर्ष 2025 अपनी खट्टी-मीठी यादों के साथ सुखद संध्या के तट पर खड़े होकर विदाई लेने को तैयार है और नववर्ष 2026 का उज्ज्वल प्रभात उदित होने वाला है। आप सभी बीत रहे वर्ष की इस सुखद संध्या में आगामी नववर्ष के उज्ज्वल प्रभात की तैयारी करें। ●

किस घट बांचें सच्चा प्रेम

मानव केवल स्थूल शरीर नहीं है, वह भावनाओं का समुच्चय है, भावनाएं सकारात्मक भी हैं और नकारात्मक भी। उसके मन का स्वभाव है नकारात्मकता के लोक में विचरना, मन को सात्विक, राजसिक व तामसिक शक्तियां चलाती हैं, सात्विक मनास्थिति में सकारात्मक भावनाएं प्रभावशाली रहती है किन्तु इंसान निरंतर इस स्थिति में रह नहीं सकता। गीता में भगवान ने इस गुणों के प्रभाव का विस्तृत उल्लेख किया है। सकारात्मक भावनाओं के क्षेत्र में करुणा, मुदिता, दया, संतुष्टि, मैत्री, परोपकार, प्रेम आदि अनेक अनुभूतियां हैं, जबकि नकारात्मक क्षेत्र में काम, क्रोध, बैर, द्वेष, ईर्ष्या जैसे अनेक दुर्गुण हैं। प्रत्येक भावना का अपना प्रभाव होता है। प्रेम सर्वोत्कृष्ट, अति उत्तम भावना है।

प्रेम के अनेक रूप हैं। मनुष्य स्वयं से, परिवार से, संबंधियों से, समाज से, देश से, वस्तुओं से, सांसारिक सुख देने वाली सुविधाओं से, गुरु से, ईश्वर से प्रेम आदि अनेक रूप स्वरूप हो सकते हैं। किन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न ये है कि किस घट में बसता है सच्चा प्रेम। तो उत्तर है गुरु और ईश्वर से प्रेम ही सच्चा प्रेम है, बाकी भ्रम में डालने वाले हैं।

सद्गुरु शिष्य का कल्याण करते हैं, उसे सत्य मार्ग का बोध कराते हैं, शिष्य को जीवन का उद्देश्य बताते हैं। गुरु का प्रेम निःस्वार्थ और सच्चा होता है। गुरु शिष्य को प्रेम करते हैं और शिष्य का धर्म है कि वह गुरु से प्रेम करे। गुरु से प्रेम का अर्थ है, वह सद्गुरु का आदर करे, सम्मान करे, उनके प्रति अटूट श्रद्धा-आस्था हो और उनके साम्यर्थ में विश्वास हो। गुरु के आदेशों, उपदेशों का पालन करे, उन्हें आचरण में उतारे।

ईश्वर का प्रेम सर्वव्यापी है, स्थायी है, कल्याणकारक है। ईश्वर का प्रेम और ईश्वर से प्रेम, दोनों में अंतर है। ईश्वर का प्रेम करोड़ों में किसी एक को मिलता है, जिसका उल्लेख भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के बाहरवें अध्याय के तेहरवें से उन्नीसवें श्लोक में विस्तार से किया है। ईश्वर से प्रेम का अर्थ है कि वह सद्गुण हम में हों, जो भगवान में है। वे गुण हैं करुणा, क्षमा, सहनशीलता, दया, मुदिता, सन्तोष और ऐसे अन्य अनेक गुण हम में भी हों तो हम ईश्वर से प्रेम करते हैं। यह सर्वोत्तम प्रेम है। अत्यंत उत्कृष्ट है। गुरु और ईश्वर से प्रेम करने वाले व्यक्ति का ही मानव जीवन सफल है।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

अपनायें संस्कृति संस्कार - पायें गुरुवर का प्यार

- मिलकर गुरु संकल्प सजायें, युवा शक्ति को आगे लायें।
- गुरुसत्ता का है आहवान, मानव में जगे दैवीय विधान।
- विश्व जागृति मिशन की रीति, सेवा सिमरन से रखे प्रीति।
- सच्चे गुरु के शिष्य कहायें, मानव में देवत्व जगायें।
- गुरुवर कृपा मिलेगी कब, सेवा सिमरन होगा जब।

सद्गुरुदेव उवाच

अपने ही कर्मों से मिलता है सुख और दुःख

इंसान अपने कर्मों का जिम्मेवार स्वयं है, दूसरा तो कोई और उसके कर्म का फल लेगा नहीं। इंसान के सामने कोई भी कर्म होगा तो इंसान की अपनी परिस्थितियां होती हैं, उसके आधार पर तरह-तरह के कर्मों को करता है। वे कर्म निश्चित रूप से अपने कर्म का फल लेकर आते हैं, उन कर्मों के फल से कोई बच नहीं पाता, किसी भी कर्म का फल जब हमारे सामने आता है तो वह अपना सुख और दुःख दोनों ही लेकर आता है। अगर सुख का कर्म था तो सुख लेकर आएगा और उसकी भी एक अलग अपनी व्यवस्था होती है, एक मौसम तक ही वह फल रहेगा उसके बाद दूसरा फल आएगा। हर कर्म का फल उसकी मुक्ति का फल है। वह अपनी पीड़ाएं अपनी खुशियां या अपनी मादकता छोड़कर जाए।

इसलिए हर मनुष्य के जीवन में दोनों चीजें साथ जुड़ी हुई है जिसके कारण वह हंसता भी रहेगा और रोता भी रहेगा। देखा जाए तो इंसान की एक अवस्था रो रही होती है और दूसरी हंस रही होती है। एक क्षण उदासी का होता है, दूसरा प्रसन्नता का होता है। इसलिए चित्त में हर समय हर्ष और शोक की लहर एक के बाद एक उठती रहती है।

मनुष्य का चित्त एक ऐसा सरोवर है, जिसमें लहरें पर लहरें उठती रहती हैं। खुशी की लहर अगर उठेगी तो उठने से पहले दुःख की लहर को जन्म देकर के जाएगी। दुःख की लहर मिटने से पहले सुख की लहर को जन्म देकर जाएगी। परिस्थितियां रुलाएंगी, दुःख का समय आएगा तब अपने भी पराएं होंगे। समझ होते हुए भी दूसरे आकर समझाएंगे। उसके बाद भी क्या समझ आ जाएगी ऐसा सम्भव नहीं है। चोट पर चोट इंसान खाता है, पर जिंदगी कहीं रुकती नहीं, वह आगे बढ़ती रहती है, जीवन कहीं रुकता नहीं है।

हां यह जरूर ध्यान रखना चाहिए निराशा, उदासी या अंधेरा उसमें कोई बल नहीं है, किसी भी अंधेरे में ताकत नहीं है और अंधेरे से कभी लड़ना भी मत क्योंकि अंधेरे से लड़ने से अंधेरा कभी भागता नहीं है, बल्कि एक ही कार्य करना होगा कि जो आपके हाथ में भगवान ने कार्य दिए हैं उन्हें आप करते रहिए।

अंधेरा चाहे कितना भी हो आपका कार्य है दीया जलाना, तो आप दीया जलाते रहिए, दीया जलता रहे इसका प्रयास करते रहें, दीया बुझ न जाए इसकी सुरक्षा करते रहिए अगर आप ऐसा दीया जलाते रहे तो अंधकार की हिम्मत नहीं कि उसका सामना कर सके। ●

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित
भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2025

18 से 20 दिसम्बर	- कोलकाता, पश्चिम बंगाल
25 से 28 दिसम्बर	- सूरत, गुजरात
01 जनवरी	- नववर्ष महोत्सव, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
03 जनवरी	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
07 से 11 जनवरी	- नागपुर, महाराष्ट्र
16 से 19 जनवरी	- उल्हास नगर, महाराष्ट्र
22 से 26 जनवरी	- वरदान लोक आश्रम, थाणे, मुम्बई, महाराष्ट्र
23 जनवरी	- बसंत पंचमी, वरदान लोक आश्रम, थाणे, मुम्बई, महाराष्ट्र एवं आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
26 जनवरी	- गणतंत्र दिवस, वरदान लोक आश्रम, थाणे, मुम्बई, महाराष्ट्र एवं आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
01 फरवरी	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
11 से 12 फरवरी	- सरसोली धाम, कुडाल (महाराष्ट्र)
14 से 15 फरवरी	- महाशिवरात्रि, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
19 से 22 फरवरी	- अकोला, महाराष्ट्र
03 मार्च	- होली मंगल मिलन एवं पूर्णिमा दर्शन आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
12 से 15 मार्च	- सनातन संस्कृति जागरण अभियान, मेरठ, उत्तर प्रदेश
26 मार्च	- राम नवमी एवं मिशन स्थापना दिवस आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
27 से 29 मार्च	- नासिक, महाराष्ट्र
2 अप्रैल	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
2 से 5 अप्रैल	- पानीपत, हरियाणा
9 से 12 अप्रैल	- बैतूल, मध्य प्रदेश
23 से 26 अप्रैल	- शिमला, हिमाचल प्रदेश
2 मई	- उल्लास पर्व, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

प्रिय आत्मन्!

इंसान जितना ज्यादा संवेदनशील होता है उतनी ही ज्यादा चोट उसे महसूस होती है। पर ध्यान रखना कभी परिस्थितियों का गुलाम नहीं बनना बल्कि परिस्थितियों को अपना गुलाम बनाना है। मौसम तो जैसे-तैसे सामने आएगा ही लेकिन उसके लिए अपने अन्दर ही एक क्षमता पैदा करनी होगी उससे लड़ने के लिए। कांटे तो दुनिया भर में जगह-जगह होंगे ही लेकिन अपने ही पांव में जूता पहनकर चलने की शक्ति पैदा करनी पड़ेगी। अपने को ही मजबूत बनाना पड़ेगा। और जब आपके सामने परिस्थितियां विपरीत हों तो उस समय भगवान से यही प्रार्थना करना कि हे मेरे दाता! हे मेरे भगवान! चाहे मेरा आप सब कुछ छीनना पर मेरी समझ, मेरी मति मेरी बुद्धि को कभी मुझसे मत छीनना। अक्ल काम करती रहे। अगर यह कृपा आपकी है तो मैं संसार में पहाड़ जैसी मुसीबतों का सामना कर सकता हूं। भगवान मेरी बुद्धि को सुबुद्धि बनाए रखना। मेरे माइन्ड का बैलेंस बना रहे, मन शांत बना रहे। परिस्थितियों से मैं कभी हार न मानूं, कभी कमजोर न पड़ूं। ध्यान रखना इन्सान हारता है अन्दर से, जब अन्दर से टूटता है तो फिर बाहर वाले भी दबा लेते हैं लेकिन जब आप अन्दर से मजबूत होंगे तो बाहर की कैसी भी स्थिति हो, पर आप हमेशा हंसते-मुस्कराते हुए आगे बढ़ते जाएंगे।

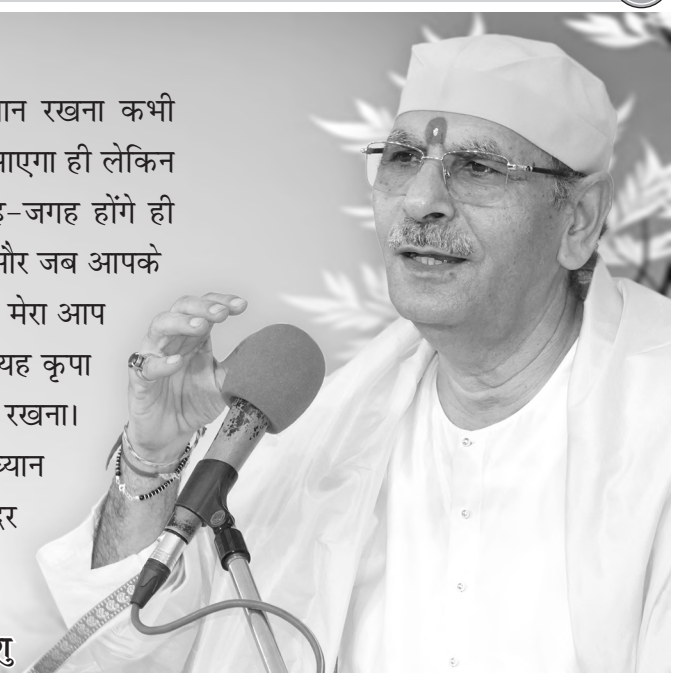

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

-आचार्य सुधांशु

धर्मकोष सदस्यता अभियान

एक बार दान, अनंतकाल तक पुण्य का वरदान

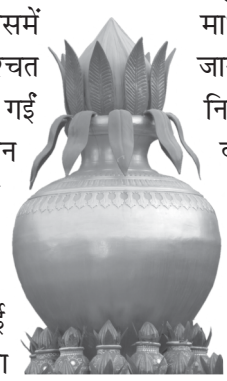

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गई विभिन्न सेवाओं के लिये दान करेगा, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जायेगा और उस राशि से प्राप्त ब्याज या अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित रहेंगी। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उस दान की अर्जित राशि से वर्षों-वर्षों तक दान देने का पुण्य लाभ पाओ।

धर्मकोष दानदाताओं के लिए आनन्दधाम में होता है

नित्य यज्ञ, पूजा, प्रार्थना एवं आरती

मिशन द्वारा संचालित सेवाकार्यों और भक्तों के अनन्तकाल तक पुण्य प्राप्ति के लिए एक **''धर्मकोष''** बनाया गया है। इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम एक कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रांगण में स्थापित किया गया, जो कि सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रहेगा और दानदाता के आनेवाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों पर गर्व करेंगी। धर्मकोष के दान-दाताओं की वंशावली शिव वरदान तीर्थ में स्थापित हैं, जहां पर नित्य सायंकालीन यज्ञ, आरती में गुरुकुल के ऋषिकुमारों द्वारा धर्मकोष के दानदाताओं के लिए यज्ञ में आहुतियां दी जाती हैं तथा उनके लिए प्रार्थना व मंगलकामना भी की जाती है।।

धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600
IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3, Nazafgarh Road,
Nangloi, New Delhi - 110041

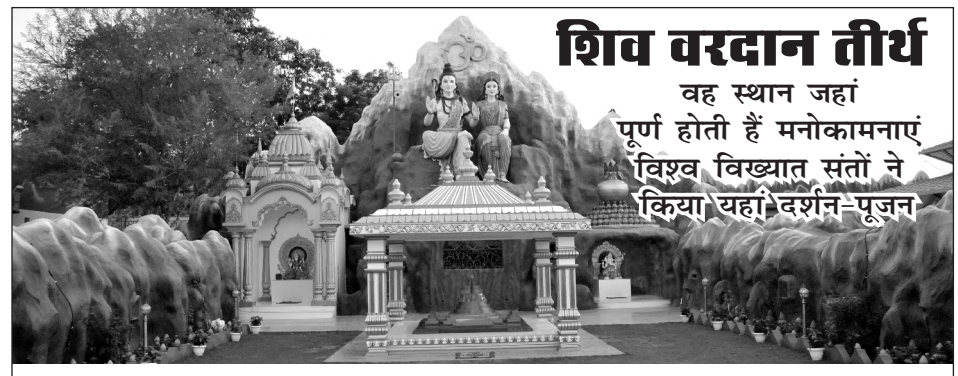

शिव वरदान तीर्थ

वह स्थान जहां पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं विश्व विख्यात संतों ने किया यहां दर्शन-पूजन

आनन्दधाम आश्रम की ओंकार पर्वत की गुफा में 12 ज्योतिर्लिंगों में विद्यमान शिव की दिव्य उर्जा कष्ट हरण करती है। इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूजन और रुद्राभिषेक से हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। देश-विदेश के भक्त यहाँ मनौती पूर्ण करने आते हैं। भारत के महान संतों ने भी यहाँ आकर दर्शन पूजन किया है और कृपा प्राप्त कर आनन्दित हुए हैं। पूज्य जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज (हरिद्वार), विश्व प्रसिद्ध राम कथा वाचक पूज्य मोरारी बापू जी, चमत्कारी विद्या के धनी सनातन गौरव बागेश्वर सरकार पूज्य पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी तथा भारत भर के सैकड़ों साधु सन्यासी एवं भक्तजन यहाँ की दिव्य ऊर्जा से लाभान्वित हुए।

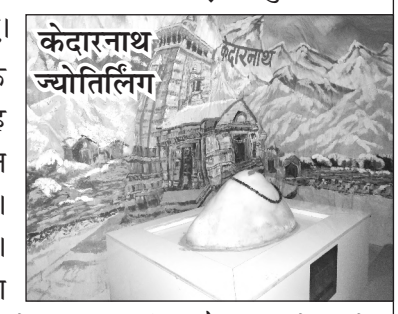

शिव वरदान तीर्थ के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक विशेष ज्योतिर्लिंग है 'केदारनाथ ज्योतिर्लिंग'। यह ज्योतिर्लिंग त्रिकोणीय आकार का है, जो भगवान शिव के तत्वज्ञान और अनंत शक्ति का प्रतीक है। यह ज्योतिर्लिंग नाद ब्रह्म का स्वरूप माना जाता है। जहां शिव की उपस्थिति ध्यान, समाधि और तपस्या के रूप में की जाती है। भगवान केदारनाथ जी के पूजन, दर्शन और अभिषेक से भक्तजनों को पाप-संताप से मुक्ति, कष्ट-क्लेश का शमन, मन-जीवन व विचारों की शुद्धि, परिवार व जीवन में शांति, सुख-समृद्धि, सौभाग्य प्राप्ति व इच्छाओं की पूर्ति तथा आध्यात्मिक उन्नति के साथ मोक्ष की प्राप्ति होती है। भगवान शिव आयु, आरोग्य और ऊर्जा के देवता हैं। इनकी श्रद्धपूर्वक पूजा-अर्चना करने से नौकरी, व्यापार में आने वाली रुकावटें दूर होती हैं तथा धन-समृद्धि की प्राप्ति और कार्य सिद्धि के द्वार खुलते हैं। शिव वरदान तीर्थ के केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर आप पाप-संताप से मुक्ति की प्रार्थना करते हुए जीवन व घर-परिवार नौकरी व्यापार में उन्नति-प्रगति व धन-समृद्धि प्राप्ति की मंगलकामना करें, आपकी पुकार सुनकर भगवान केदारनाथ मनोकामना पूर्ण करेंगे। केदारनाथ जी के दर्शन, पूजन, जाप से कई भक्तों की मुंहमांगी मुरादें पूर्ण हुई हैं।

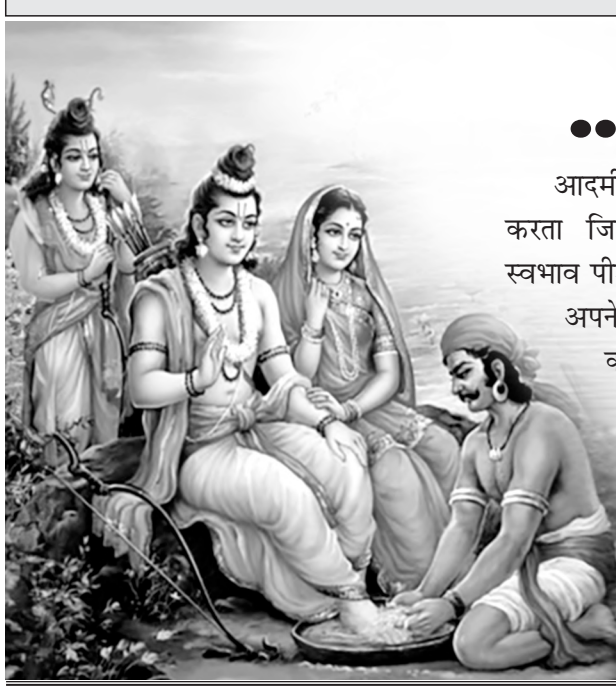

... तब घर में ही उतरेगा स्वर्ग

आदमी को अभाव इतना दु:खी नहीं करता जितना एक गलत आदमी का स्वभाव पीड़ा देता है। अपने चेहरे को नहीं अपने स्वभाव को सुंदर बनाने की कोशिश करें। बच्चा, लायक हो, अच्छे मित्र हों, पवित्र कमाई हो, पति-पत्नी में बहुत प्रेम हो तो घर का माहौल स्वर्ग जैसा हो जाता है। कहते हैं कि आपस में प्रेम और लगाव होने से विचारधाराएं आपस में मिलने लगती हैं। पति ने कुछ कहा कि पत्नी तुरन्त समझ जाती है। गंगा नदी पार करने के बाद निषादराज (केवट) को कुछ देना था, श्रीरामचंद्रजी कुछ सोच ही रहे थे उससे पहले सीताजी अपने उंगली से अंगूठी उतारकर श्रीराम के हाथों में दे दीं। इतनी समझ और इतना भाव होना चाहिए पति-पत्नी में। गृहिणी का कर्तव्य है कि पति को धर्म की तरफ जोड़े। वफादारी और निष्ठा पैसे से नहीं खरीदी जाती, उसे कमाना पड़ता है।

जिस घर में पत्नी चुप न रहती हो अनावश्यक बोलती रहे, बेटा आज्ञा मानने के बजाय आज्ञा देने वाला हो, नौकर जवाब देने लगे तथा घर के अंदर एकमत न हो तो उस घर को बिगड़ते देर नहीं लगती क्योंकि वहां हमेशा अशांति के चलते नारकीय स्थिति बनी रहती है। इसलिए घर में मस्ती, खुशी और शांति लाओ तब देखोगे कि आपका घर सबसे अमीर घर हो जायेगा तथा आपके घर में स्वर्ग जैसा माहौल होगा। ●

वृंदावन में सम्पन्न हुआ श्रीकृष्ण ध्यान योग

कई जन्मों के पुण्य का फल है श्री कृष्ण चरणों में ध्यान का सौभाग्य-सुधांशु जी महाराज

पूज्य महाराजश्री एवं डॉ. अर्चिका दीदी के सान्निध्य में ध्यानमग्न हुए देश-विदेश के साधकगण

श्रीवृंदावन धाम, उत्तर प्रदेश, 12 से 16 नवम्बर, 2025, पूज्य सद्गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के पावन सान्निध्य में आयोजित भगवान श्रीकृष्ण के लीलाधाम श्रीवृंदावन का ध्यान शिविर भक्तों में आध्यात्मिक अनुभूतियां जगाने में सफल रहा। विश्व जागृति मिशन के तत्वावधान में संचालित इस चार दिवसीय 'श्रीकृष्ण ध्यान योग' शिविर में देश-विदेश के हजारों साधकों को अपनी गुरुसत्ता एवं पूज्या गुरु माँ सहित सम्पूर्ण गुरु परिवार का पावन सान्निध्य पाने का सौभाग्य मिला। सभी साधक भगवान श्री कृष्ण की इस बाल लीला भूमि के कण-कण में प्रवाहित लीला पुरुष की दैवीय ऊर्जा को आत्मसात करके जीवन को आध्यात्मिक ऊर्जा से भरने में सफलता पाई। वृंदावन की पवित्र भूमि पर गुरुदेव पूज्य श्री सुधांशु महाराज महाराज, पूज्या गुरु मां एवं डॉ. दीदी ने अपने हजारों भक्तों के साथ सर्व प्रथम श्री बांके बिहारी मंदिर पहुंचकर आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात छटीकरा रोड स्थित वैजयंती धाम शिविर का शुभारम्भ किया। वृंदावन तीर्थ की गलियों में उद्घोष पूर्ण की गयी यह आध्यात्मिक परिक्रमा दर्शकों में भी श्रद्धा, भक्ति भरने में सफल रही। साधकों ने इस पांच दिवसीय श्रीकृष्ण ध्यान योग शिविर के विविध सत्रों में भक्तों का अपनी गुरु सत्ता से नवीन ध्यान विधियों एवं शैलियों की प्रयोग प्रणाली को आत्मसात करना, भक्तों संग गुरु परिवार द्वारा की गयी परिक्रमा, दिव्य स्थलों का दर्शन, मंगल आरती व महायज्ञ में सहभागिता आह्लादित एवं भावविभोर करने वाले प्रयोग थे। ध्यान शिविर के सभी सत्रों में गुरुवर व डॉ. दीदी के मार्गदर्शन में साधकों ने ध्यान के रहस्यपूर्ण प्रयोगों को आत्मसात किया। वहां के कण-कण में घुले तीर्थ तत्व को अनुभूतियों में उतारा।

गुरुदेव के साथ संकल्पित भक्तों ने आयोजित 11 कुण्डीय श्री गणेश लक्ष्मी महायज्ञ में सृष्टि की सुख, समृद्धि, दैवीय शान्ति एवं पुण्य संकल्प से यज्ञाहुतियां

प्रदान कीं। कथावाचक श्री पुण्डरीक गोस्वामी जी भी सपरिवार पधारे और यज्ञ में सहभागीदार बने। विश्व जागृति मिशन के उपाध्यक्ष डॉ अर्चिका दीदी जी ने सभी भक्तों को वैश्विक शान्ति और अमन के लिए 'भगवान श्रीकृष्ण प्रार्थना योग' कराया और सम्पूर्ण शिविर के प्रयोगों के पीछे कार्य कर रही वैज्ञानिकता से अवगत कराया। शिविर के विविध सत्रों में सनातन जागृति के प्रति समर्पित सन्त मुनीराम दास जी महाराज, श्री लक्ष्मी नारायण चौधरी, मंत्री पशुपालन उ.प्र. एवं श्री अशोक अग्रवाल जी, एम.एल.सी का शिविर में आगमन हुआ। सभी ने पूज्यवर के इस ध्यान शिविर की आध्यात्मिक अनुभूतियों को आत्मसात किया और आशीर्वाद पाकर अपने को गदगद अनुभव किया। भक्तों द्वारा सभी अतिथियों का समुचित स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज ने साधकों को संबोधित करते हुए कहा-जिस प्रकार एकान्त जगह पर रखे हुए दिया की लौ अकंपित रहती है, उसी तरह ध्यान के निरंतर अभ्यास से जीवन को अकंपित बनाया जाना चाहिए। गुरुदेव ने भक्तों को आत्मा की ज्योति को विश्व आत्मा से जोड़ने के अभ्यास की निरंतरता की प्रेरणा दी और कहा-हर क्षण ध्यान का अभ्यास करके अपनी एनर्जी का ऊर्ध्वगामी रूपांतरण करते रहना चाहिए।

पूज्य महाराजश्री ने कहा-ध्यान द्वारा ऊर्जा के सही दिशा में रूपांतरण से हमारे अन्दर की शान्ति खिलने लगती है। एक दिन हम सभी ध्यान साधना करते हुए सृष्टि को सकारात्मक ऊर्जा देने वाले बन जाते हैं, अत: इसे साधारण में न लें। गुरुदेव ने कहा "भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में बैठकर साधना का सौभाग्य जन्मों के पुण्य उदय होने और भगवान की विशेष कृपा से ही सम्भव हो पाता है।"

ध्यान सत्र में साधकों को सम्बोधित करते हुए योग गुरु डॉ अर्चिका दीदी जी ने कहा-अपने जीवन व घर में पवित्रता लाने के लिए श्री कृष्ण ध्यान अपनों के बीच भी करते रहें। ध्यान से निकलने वाली पवित्र तरंगों से सम्पूर्ण ब्रह्मांड की पवित्रता झंकृत होने लगती है, और वह साधक के आस पास एकत्र होकर संबंधों में सरसता भरती है। डॉ दीदी जी ने कहा भगवान श्रीकृष्ण के मनोहर छवि के ध्यान से पारिवारिक संबंधों में भी प्रेम बढ़ता है, जीवन में प्रसन्नता की सतत अनुभूति होती है।

दीदी जी ने कहा प्रथम तो व्यक्ति का तीर्थ आगमन ही बड़े भाग्य का विषय है, उसके साथ परमेश्वर से जुड़ाव के लिए ध्यान के आसन पर बैठना और भी बड़ी बात है, उसमें भी सदगुरु का मार्गदर्शन मिलना, यह सब कुछ सहज ही परम सौभाग्य बन जाता है। ●

गुरुवर में हैं भगवान राम के लोक कल्याण का भाव

तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार।
राग न रोष न दोष दुख, दास भए भव पार।। (दोहावली)

तुलसी दास जी कहते हैं जो भगवान राम से ममता रखते हैं और सम्पूर्ण संसार के प्रति समता का भाव रखते हैं, जिनके मन में राग, द्वेष या दुख नहीं है वे ही भगवान की कृपा के विशेष पात्र हैं। भगवान राम के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है उनकी लोक कल्याण भावना। उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख, इच्छाओं और अधिकारों से ऊपर उठकर सदैव जनकल्याण को प्राथमिकता दी। यही कारण है कि रामराज्य त्रेतायुग से लेकर आज तक न्याय, शांति और समृद्धि का आदर्श माना जाता है। भगवान राम के लिए निजी हित से ऊपर जनता का हित था। अयोध्या का राज छोड़कर बनवास स्वीकार करना इस बात का सशक्त प्रमाण है।

भगवान राम ने अपने जीवन में कभी पक्षपात नहीं किया। शबरी के बेर हों या केवट की सेवा, उन्होंने हर एक के प्रति सम्मान दिखाया। वानर हो या भालू सभी को महत्व दिया उनकी यही समानता ने उन्हें जन-जन के मन और हृदय में बसने वाले राम बना दिया। उन्होंने प्रजा के दुख को अपना दुख माना और शत्रु के प्रति भी अनुचित भावना नहीं दिखाई अपितु अवसर मिलने पर क्षमा किया। भगवान राम कहते थे धर्म वही है जो लोक मंगल के लिए हो। रावण वध हो या सीता की रक्षा सबमें उनकी मूल भावना लोक कल्याण की ही रही।

भगवान राम के उसी लोक कल्याणकारी भाव को मैंने अपने गुरुवर में देखा और मैंने ही नहीं आज गुरुवर के लोक कल्याणकारी कार्य सारी दुनिया देख रही है। विश्व में मानवता की जागृति के लिए ही पूज्य गुरुवर ने विश्व जागृति मिशन की स्थापना की। आज मिशन के धर्मार्थ अस्पतालों में लाखों रोगियों की सेवा की जा रही है। मिशन के आदिवासी पब्लिक स्कूलों में हजारों आदिवासी बच्चों का जीवन संवर रहा है, कूड़ा बीनने वाले गरीब बच्चों के लिए ज्ञानदीप विद्यालय, धर्म संस्कृति के उत्थान के लिए गुरुकुल में सैकड़ों ऋषिकुमारों, धर्माचार्यों का निर्माण, मिशन के बाल संस्कार केन्द्रों में बच्चों को धर्म और नैतिक मूल्यों की शिक्षा, अनाथ बच्चों के लिए अनाथालय, प्राकृतिक आपदाओं में सहयोग जैसे अनेकानेक लोककल्याणकारी कार्य पूज्य महाराजश्री के आशीर्वाद से किये जा रहे हैं।

नववर्ष 2026 की अग्रिम बधाई के साथ गुरुदेव के सान्निध्य में आनन्दधाम आश्रम में आयोजित **'नवप्रभात 2026'** कार्यक्रम में आप सपरिवार इष्ट-मित्रों के सहित सादर आमंत्रित हैं।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। चाहे टी.वी., सोशल मीडिया, सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से। आपके जीवन में भी गुरु से जुड़ने के पश्चात् निश्चित ही कुछ अप्रत्याशित, आश्चर्यजनक बदलाव आए होंगे, आपत्ति-विपत्ति से बाहर निकले होंगे, तो आप अवश्य हमसे अपने अनुभव साझा कीजिए ताकि आपसे प्रेरित होकर अन्य भक्तों की भी गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़े और उन्हें भी आप के जैसा ही गुरु कृपा का लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने अनुभव फोटो सहित श्री शिवाकांत द्विवेदी जी (9968613351) सहसम्पादक धर्मदूत को अवश्य भेजें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

बागेश्वर बाबा श्री धीरेन्द्र कृष्ण की पदयात्रा में पूज्य महाराज श्री का दिव्य सन्देश

'सनातन धर्म' उत्थान के लिए सभी एकजुट हों–सुधांशु जी महाराज

फरीदाबाद (हरियाणा)। पूज्य धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री बागेश्वर धाम सरकार के नेतृत्व में 7 से 16 नवम्बर, 2025 तक आयोजित सनातन पदयात्रा में उनके विशेष आमंत्रण पर पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज दिनांक 8 नवम्बर, 2025 को फरीदाबाद रामलीला ग्राउण्ड पधारे गुरुवर ने सैकड़ों संतों की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर सनातन पदयात्रा में सम्मिलित लाखों श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा–यह यात्रा सनातन के उदय की यात्रा है। सनातन के अभ्युदय की यात्रा है। सनातन एकता की आज बहुत बड़ी आवश्यकता है। जब संकट पड़ता है बंदर भी एकजुट होकर लड़ाई लड़ते हैं। जब संकट पड़ता है तो मधुमक्खी के छत्ते पर कोई पत्थर मार दे तो छोटी सी मधुमक्खी भी सारी इकट्ठी हो करके लड़ाई लड़ती हैं, जब संकट पड़ता है कौवे भी इकट्ठे हो जाते हैं तो क्या इनसे भी गये-बीते हैं कि हम इक्ट्ठे नहीं हो सकते। आज केवल ताली बजाने का समय नहीं है, आज ताल ठोकने का भी समय है, इसलिए ताली भी बजाइये और ताल भी ठोकने के लिए तैयार होईये। निवेदन करना चाहता हूं आप सभी से आसमान से जब बूंद बरसती है, देखने में छोटी होती है, लेकिन जब सारी बूंदे मिलकर बरसती हैं तो नीचे नदियां बहने लग जाती है। भले ही आप बूंद-बूंद हैं लेकिन सारी बूंदे मिलकर एक साथ बरसना शुरू करो, अब प्रेम की नदी बहनी चाहिए। एकता की नदी बहनी चाहिए और ये नदी पूरे संसार को दिखा दे कि सनातन की शक्ति क्या है। इसलिए निवेदन करना चाहता हूं आप सभी से छोटे-छोटे रेशे इकट्ठे करके रस्सी बनती है, एक छोटे से रेशे में कोई ताकत नहीं है, लेकिन जब वे रेशे मिलकरके रस्सी बन जाती है तो हाथी को भी बांधने की ताकत रखती है। आज यह रस्सी सनातन की बंध जानी चाहिए और जो उन्मत्त हाथी बनकर चोट पहुंचा रहे हैं उनको बांधने के लिए भी और अपनी शक्ति को एकजुट रखने के लिए भी इस रस्सी को बनाने की आज बहुत बड़ी आवश्यकता है।

मैं निवेदन ये भी करना चाहता हूं आज संचार क्रांति का युग है, संचार क्रांति के

इस युग में संचार के माध्यम से भी संस्कार क्रांति का कार्य हम सबको मिलकर करना चाहिए। जो लोग मिलकर चलते हैं वो एक होते हैं। जिनके विचार एक होते हैं वो एक होते हैं। और जो भेद-भाव को छोड़कर भाषा को, भूषा को, भोजन को, भजन को, भाव को सबको एक रूप में अपनाते हैं, वे हमेशा एक होते हैं। और जो एक रहते हैं बस उन्हीं की जीत होती है। ●

विहिप द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सोशल मीडिया प्रशिक्षण कार्यशाला में

पूज्य महाराजश्री का दिव्य मार्गदर्शन

» डॉ. आलोक कुमार विहिप के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने गुरुवर से लिया आशीर्वाद

आनन्दधाम आश्रम। पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज के आशीर्वाद से आनंदधाम आश्रम में दो दिवसीय सोशल मीडिया प्रशिक्षण कार्यशाला के अंतिम सत्र में विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष डॉ आलोक कुमार जी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज ने कहा कि हमारे जीवन दर्शन गीता-रामायण व वेद-उपनिषद् हैं और पूरे विश्व में सनातन संस्कृति श्रेष्ठ संस्कृति है। सनातन संस्कृति के उत्थान के लिए सभी को इंजन का डिब्बा बनना होगा तभी यह हमारे हिन्दू संस्कृति और एकता सुरक्षित रहेगा। उन्होंने इस संचार क्रान्ति के साथ साथ संस्कार क्रान्ति पर भी ध्यान देते हुए सनातन को जानने और समझने के लिए प्रेरित किया। महाराजश्री ने यह भी कहा कि जहां हैं वहीं से अपने हिन्दुत्व को बचाने के लिए प्राणपण से सभी को लगना होगा। सोशल मीडिया के माध्यम से सभी को जगाने का कार्य विश्व हिन्दू परिषद द्वारा किया जा रहा है यह अत्यन्त सराहनीय है। विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष डॉ आलोक कुमार जी ने पूज्य गुरुवर श्री सुधांशु जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर ध्यान एवं

योग गुरु डॉ अर्चिका दीदी जी ने कहा कि खुद को अपडेट रखते हुए जीवन में नया सीखने के लिए सकारात्मक विचारों से जुड़ने तथा सोशल मीडिया पर चल रहे नकारात्मक संदेशों से बचते हुए अपने बच्चों को भी इस बुरी आदतों से दूर रखना आज बहुत जरूरी हो गया है। ●

घरेलू औषधियों में छिपा अच्छी सेहत का राज

हमारे दिनचर्या में कई ऐसे फल, सब्जियां, मसाले व वनस्पतियों का प्रयोग होता है जो कई प्रकार के रोग-विकारों को आसानी से खत्म कर देते हैं। ये औषधियां प्रायः हमारे घर में ही मौजूद होती हैं जिनका प्रयोग करके रोग-बीमारियों से बचा जा सकता है। इस आलेख में इन्हीं फल, सब्जी, मसाले व वनस्पतियों का उल्लेख किया जा रहा है।

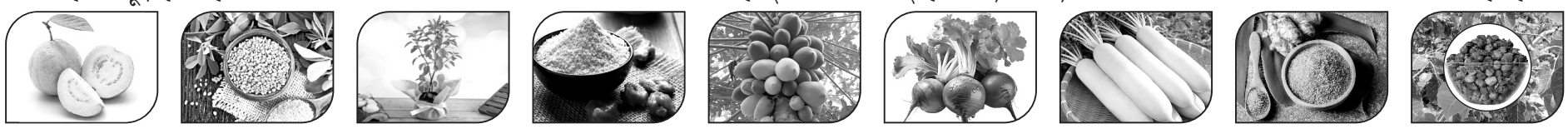

अमरूद : प्रतिदिन अमरूद खाने से कब्ज की शिकायत दूर हो जाती है। कच्चा अमरूद आग में भूनकर इसके गूदे में सेंधा नमक मिलाकर सुबह में खाली पेट सेवन करने से खांसी में लाभ मिलता है। यदि सूखी खांसी हो, तो चीनी के साथ इसका सेवन करना चाहिए। अमरूद की पत्तियां पानी में उबालकर छानकर इस पानी से कुल्ला करने से दांत दर्द में लाभ मिलता है।

मेथी : सुबह-शाम आधा-आधा चम्मच मेथी का चूर्ण सेवन करने से मधुमेह और कब्ज में लाभ मिलता है। गुड़ और मेथी मिलाकर पाक बनाकर सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करने से गठिया रोग तथा घुटनों की पीड़ा में विशेष लाभ मिलता है। 1-1 चम्मच मेथी का चूर्ण सेवन करने से गैस्ट्रिक समस्या में भी लाभ मिलता है।

तुलसी : सिर दर्द, जुकाम, गले में खराश, सुस्ती आदि की शिकायत होने पर तुलसी की चाय का सेवन लाभप्रद है।

100 ग्राम तुलसी के पत्तों के रस में शक्कर मिलाकर शर्बत बनाकर प्रतिदिन 1 छोटा चम्मच की मात्रा में इस शर्बत का सेवन करने से छाती में जमा हुआ कफ निकल जाता है। तुलसी के पत्तों का रस निकालकर हल्का गरम करके 1 बूंद कान में डालने से कान का दर्द शांत होता है।

हींग : गरम पानी में हींग घोलकर नाभि के चारों तरफ लेप करने से पेट दर्द, अफारा, डकार आना आदि विकारों में लाभ मिलता है। हींग के लेप से पसलियों के दर्द, सिर के दर्द में लाभ मिलता है। शुद्ध हींग को खूब महीन पीसकर शुद्ध शहद में मिलाकर रख लें। सुबह-शाम आंखों में सलाई से यह मिश्रण लगाने से कई प्रकार के आंख रोगों में लाभ मिलता है।

पपीता : कच्चे पपीते की बिना मिर्च-मसाले की सब्जी और पका हुआ पपीता खाने से पीलिया रोग एवं ब्लडप्रेशर में भी लाभ मिलता है। 50 ग्राम कच्चा पपीता उबालकर खाने से पुराना अतिसार नष्ट होता है।

शलजम : शलजम मधुमेह रोग से पीड़ित व्यक्तियों के लिए औषधि का कार्य करता है। शलजम को पानी में उबालकर पीने से खांसी का निवारण होता है। पैरों की बिवाइयों पर शलजम रगड़ने से बिवाइयां जल्दी भरने लगती हैं और बिवाइयों से रक्त आना भी बंद हो जाता है।

मूली : 1 कप मूली के रस में 1 चम्मच अदरक का रस और 1 चम्मच नीबू का रस मिलाकर पीने से पेट की जलन, अरुचि, अपच, कब्ज आदि विकारों में पूरा लाभ मिलता है। मूली और मूली के पत्तों का स्वरस 1-1 कप की मात्रा में सुबह-शाम पानी के साथ सेवन करने अथवा मूली और मूली के पत्तों का साग खाने से यकृत शोथ में लाभ मिलता है।

हल्दी : जुकाम, दमा, कफ की शिकायत हो, तो प्रतिदिन तीन बार 2 ग्राम हल्दी का चूर्ण सेवन करके गरम पानी पीने से लाभ मिलता है। चौथाई चम्मच हल्दी का चूर्ण लेकर 1 चम्मच शहद के साथ सुबह-शाम सेवन करना खांसी में लाभप्रद है। नीम की पत्तियों के साथ हल्दी पीसकर सरसों के तेल में गरम करके सिंकाई करने और पट्टी बांधने से मोच ठीक हो जाती है।

पीपल : पीपल के फल का चूर्ण बनाकर शहद के साथ सेवन करने से खांसी में लाभ मिलता है। पीपल के 2-3 पत्तों को अच्छी तरह पीसकर गुड़ के साथ सेवन करने से पेट दर्द में चमत्कारिक लाभ मिलता है।

"धर्मादा" लोक कल्याणकारी सेवाकार्यों में सहयोग

'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए धार्मिक कार्यों से जुड़ें

धर्म शास्त्रों का संदेश है कि व्यक्ति जो भी कमाये उसमें से कुछ अंश धर्म के लिए दान कर अपने धन की शुद्धि करे। क्योंकि कहा गया है-'धर्मो रक्षति रक्षितः' जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

**इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता,
मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों, जन्मों तक काम आता है।**

संस्कृति का संवाहक गुरुकुल

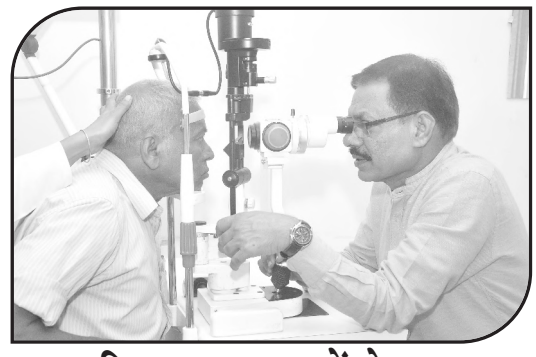

करुणासिन्धु अस्पताल में नेत्र उपचार

बालाश्रम (अनाथाश्रम)

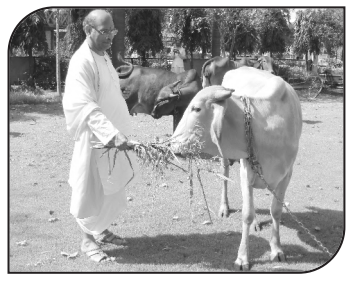

गौशाला में गौग्रास

आनन्दधाम का वृद्धाश्रम

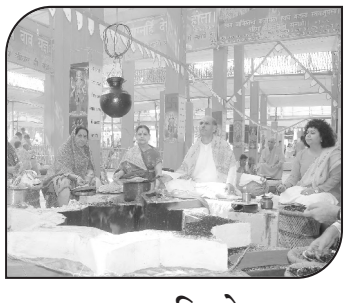

यज्ञ-अग्निहोत्र

दैवीय आपदा सहयोग

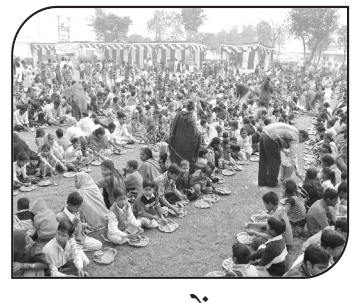

आनन्दधाम में भण्डारा

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

एक सुविधा यह भी

दिल्ली प्रदेश स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ का प्रथम स्थान

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश सरकार की ओर से आयोजित दिल्ली प्रदेश स्तरीय गुरुकुल खेल प्रतियोगिता में महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार पाकर प्रदेश को गौरवांवित किया। प्रथम चरण की खेल प्रतियोगिता **त्यागराज स्टेडियम** में एवं **दूसरे चरण की प्रतियोगिता 14 व 15 नवंबर आनन्दधाम** परिसर में रखी गयी। त्यागराज स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित विविध वर्गीय खेल प्रतियोगिताओं में कक्षा 6 से 9 वर्ग के अंतर्गत 200 एवं 400 मीटर की दौड़ में तथा कक्षा 10 से 12 वर्ग के तहत 100 एवं 200 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता इन सभी में महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ प्रथम स्थान पर रहा। जबकि 400 मीटर में द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने में सफल रहा। इसके अतिरिक्त शास्त्री व आचार्य वर्ग के क्रम में आयोजित 100 मीटर दौड़ में महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ ने तृतीय स्थान और 400 मीटर में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

वहीं **14-15 नवंबर तक आनन्दधाम** परिसर में रखी गयी दूसरे चरण की खेल प्रतियोगिता में प्रदेश भर से आये विद्यार्थियों ने सहभागिता की। जिसमें कक्षा 6 से 9 तक के वर्ग ग्रुप के अंतर्गत सम्पन्न खेलों में महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ शाटपुट में प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर रहा। लांग जम्प में प्रथम एवं द्वितीय स्थान, कबड्डी में द्वितीय स्थान, खो-खो में प्रथम स्थान, एकल योग में द्वितीय एवं तृतीय स्थान, एवं समूह योग में द्वितीय स्थान पाने में यह गुरुकुल सफल रहा। जबकि कक्षा 10 से 12 वाले वर्ग में सम्मिलित खेल प्रतियोगिताओं के अंतर्गत महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ को शॉटपुट में प्रथम एवं द्वितीय स्थान, लांगजम्प में तृतीय स्थान, कबड्डी में प्रथम, खो-खो में द्वितीय, एकल योग में द्वितीय एवं तृतीय और समूह योग में प्रथम स्थान पाने में सफल रहा। इसी क्रम में शास्त्री- आचार्य वर्ग के अंतर्गत कबड्डी एवं खो खो, बॉलीबॉल में प्रथम स्थान, शॉटपुट में प्रथम एवं तृतीय स्थान, लांगजम्प में तृतीय स्थान, जबकि एकल योग में प्रथम-द्वितीय एवं तृतीय स्थान और समूह योग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

इस प्रकार पूज्य गुरुदेव महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी के आशीर्वाद एवं अपनी कुशलता के बल पर दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित सभी खेल प्रतियोगिताओं में महर्षि वेद व्यास गुरुकुल विद्यापीठ के छात्रों ने महानगर के सभी गुरुकुलों में सर्वाधिक पुरस्कार जीतकर मिशन का गौरव बढ़ाया। ●

आनंदधाम में भारत सरकार द्वारा आयोजित 17 वां आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम दो सत्रों में सम्पन्न

भारत के भविष्य और देवदूत हैं आदिवासी युवा—सुधांशु जी महाराज

» महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने दी शुभकामनाएं

आनन्दधाम। विश्व जागृति मिशन मुख्यालय आनंदधाम में 15 से 21 नवम्बर और 24 से 30 नवम्बर, 2025 तक दो सत्रों में युवा आदान प्रदान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज, जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के सान्निध्य एवं समागम से दिव्य चेतना का उदय हुआ। इस अवसर पर पूज्य महाराजश्री ने कहा कि हमारे युवा आदिवासी समुदाय को देश के मुख्य धारा में लाना अति आवश्यक है। उन्होंने छात्रों को देवदूत से संबोधन करते हुए मन में निराशा न लाते हुए समस्त सपने पूर्ण होने का मंगल आशीष देकर प्रोत्साहित किया। गुरुवर ने विश्व जागृति मिशन द्वारा आदिवासी समुदाय में चलाए जा कार्यों का भी जिक्र किया। इस अवसर पर डॉ. अर्चिका दीदी जी ने कहा कि युवा हमारे भारत देश का भविष्य हैं और इन्हें मुख्य धारा में लाने के लिए जो कार्य किया जा रहा है वह अत्यन्त सराहनीय है।

कार्यक्रम में जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी ने कहा कि भारत सरकार द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के लिए बहुत-बहुत बधाई और हमारे पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी को प्रणाम एवं डॉ. दीदी को भी शुभकामनाएं देते हुए विश्व जागृति मिशन द्वारा ऐसे आयोजन को प्रोत्साहन देने के लिए सराहना की और उपस्थित समस्त आदिवासी भाइयों बहनों को मंगल आशीष दिए। इस मौके पर गृह मंत्रालय भारत सरकार तथा खेल मंत्रालय के कई वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहे। ●

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं—

"VISHWA JAGRITI MISSION" का
A/c No. 916010029741912 Axis Bank,
East Punjabi Bagh, New Delhi-110026,
IFS CODE - UTIB0002497.

भुगतान करने के लिए, पेटीएम या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें
www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org याव्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि ''विश्व जागृति मिशन-गौशाला'' के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE
Accepted Here
भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

बरनाला में चार दिवसीय सत्संग सम्पन्न

गीता एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं, मानवता का मार्गदर्शन करने वाला जीवन सूत्र -सुधांशु जी महाराज

बरनाला (पंजाब)। पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में विश्व जागृति मिशन बरनाला (पंजाब) मंडल द्वारा 27 से 30 नवंबर, 2025 तक 'गीता का जीवन संदेश' विषय पर पहली बार चार दिवसीय सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग के अवसर पर 5 कुण्डीय श्री गणेश-लक्ष्मी यज्ञ का भी आयोजन किया गया, जिसमें पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में भक्तों ने यज्ञाहुतियां डालकर भगवान यज्ञ नारायण की कृपा और गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस अवसर पर भक्तों को आशीर्वाद देते हुए महाराजश्री ने कहा कि श्रीमद्भागवत गीता मात्र एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता का मार्गदर्शन करने वाला जीवन सूत्र है। गीता हमें जीवन से भागने का नहीं बल्कि अपने कर्तव्यों, चुनौतियों और सत्कर्मों के प्रति जागरूक होने का संदेश देती है।

बच्चों के लिए आयोजित सत्र में पूज्य महाराजश्री ने बच्चों को संबोधित करते हुए

कहा कि जीवन को सही दिशा देने का सबसे सुंदर समय बचपन ही होता है। उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी हमारे राष्ट्र का भविष्य है, इसलिए उन्हें केवल उपहार देने की बजाय संस्कारों का उपहार देना ही सबसे बड़ा दान है। 'संस्कार जीवन को सजाते हैं, उपहार केवल क्षणिक आनंद देते हैं'। महाराजश्री ने कहा कि माता-पिता अगर अपने बच्चों को सही मार्गदर्शन देंगे, तो वे आध्यात्मिक रूप से मजबूत व संस्कारवान बनकर समाज में श्रेष्ठ

योगदान देंगे। बच्चों को बचपन से ही ईमानदारी, अनुशासन, करुणा और परिश्रम का महत्व समझाना चाहिए। कार्यक्रम में उपस्थित छात्र-छात्राओं ने प्रश्नोत्तरी के माध्यम से पूज्य महाराजश्री से अपनी समस्याओं का समाधान भी प्राप्त किया।

कार्यक्रम के दौरान ही महाराजश्री बरनाला स्थित स्वामी अमृतानंद महाराज के आश्रम में भी पहुंचे, जहां उन्होंने भक्तों को आशीर्वचन देते हुए कहा कि जीवन में कर्म ही पूजा है। उन्होंने उपस्थित समुदाय को अपने पवित्र आशीष से अनुग्रहित किया।

सत्संग के दौरान सैकड़ों भक्तों ने पूज्य महाराजश्री से मंत्र दीक्षा लेकर अपने जीवन को नवदिशा देने का संकल्प लिया। सत्संग कार्यक्रम में पूज्य महाराजश्री को सुनने के लिए बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं के साथ, राजनेता, प्रबुद्धजन और समाज के प्रतिष्ठित जन पधारे। बरनाला मंडल के प्रधान श्री दीपक सोनी जी के नेतृत्व में मंडल के सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से यह कार्यक्रम अतिसफल रहा।

आनंदधाम में मनायी गयी गीता जयंती

जीवन से भागने का नहीं, जागने का संदेश देती है गीता -सुधांशु जी महाराज

आनन्दधाम। पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में विश्व जागृति मिशन द्वारा 1 दिसंबर, 2025 को गीता जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञशाला में गीता यज्ञ एवं गीता पूजन से हुआ। तत्पश्चात गीता पाठ एवं कृष्ण भजनों से आनंदधाम आश्रम का व्यास सभागार भक्तिमय हो गया। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जनकपुरी दिल्ली एवं विश्व जागृति मिशन इंटरनेशनल योग स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में गीता श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता शलाका प्रतियोगिता, विशिष्ट व्याख्यान एवं उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि वितरण आदि कार्यक्रम भी आनंदधाम में आयोजित किए गए।

इस अवसर पर पूज्य महाराजश्री का गीता संदेश सुनने के लिए आनंदधाम आश्रम में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। भक्तों को संबोधित करते हुए पूज्य महाराजश्री ने कहा पांच हजार से भी अधिक समय बीता है जब एकादशी रविवार के दिन कृष्ण भगवान ने अर्जुन को माध्यम बनाकर गीता का संदेश दिया और यह संदेश पूरे भारत के लिए ही नहीं, विश्व के लिए अमृत संदेश है।

गीता का जीवन दर्शन प्रसिद्ध है प्रचलित है लोग इससे प्रेरणा लेते हैं। महाराजश्री ने गीता के विशिष्ट उदाहरण देते हुए गीता को पढ़ने और गीता के संदेश जीवन में उतारने की प्रेरणा दी, उन्होंने कहा कर्त्तव्य के रथ से उतरकर भागने की इच्छा रखने वाले अर्जुन को ही नहीं बल्कि समस्त विश्व को गीता के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण ने एक नई संजीवनी दी, सात सौ श्लोकों की यह गीता ऐसा समझिए कि जीवन जीने के सात सौ मंत्र हैं। इन मंत्रों में सात सौ प्रकार के विचार ही नहीं, एक-एक विचार न जाने कितने-कितने सुंदर विचारों को जन्म देने की शक्ति रखता है। मनुष्य विचारों से ही बना है। अगर हमारे विचार महान होंगे तो जीवन भी महान होगा। इसलिए विचारों से कभी हीन नहीं

हों, विचार कभी हल्के नहीं होने दें। अगर कभी मन निराशा से ग्रस्त हो जाये तो गीता के संदेश का चिंतन करना शुरू कर दीजिए, नयी शक्ति मिलेगी। गीता कोई साधारण ग्रंथ नहीं है, अपने घर में श्रद्धा से रखिए और इसको पढ़े भी, चिंतन भी करें भगवान की कृपा होगी। भगवान गीता में कहते हैं कि कोई अत्यंत पापी और दुराचारी भी जब अनन्य श्रद्धा से मेरा भजन करने लगता है और मेरे मार्ग पर चलने लगता है तो जैसे किसी ईंधन के विशाल ढ़ेर पर आग की एक छोटी सी चिंगारी गिर जाने पर वह जलकर खाक हो जाता है वैसे ही मेरी शरण में आने पर पाप जल जाते हैं और भक्ति का उदय हो जाता है।

ज्ञात हो कि गीता जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में विश्व जागृति मिशन आनंदधाम द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रतिभागी विजेताओं को गीता जयंती के अवसर पर पूज्य महाराजश्री के करकमलों द्वारा प्रमाण पत्र और पुरस्कार राशि प्रदान की गई। इसी अवसर पर विश्व जागृति मिशन इन्टरनेशनल योग स्कूल से योग साइंस, कर्मकांड व अन्य विषयों पर पोष्ट ग्रेज्युएट डिप्लोमा प्राप्त छात्र-छात्राओं को पूज्य गुरुवर के करकमलों से डिग्रियां प्रदान की गई। भण्डारा प्रसाद वितरण के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "धर्मदूत" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान